पढ़ें और सीखें योजना

डा० श्याम सिंह 'शशि'

विभागीय सहयोग
डा० रामजन्म शर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

(घ) देश-विदेश परिचय
(ङ) सांस्कृतिक विषय
(च) वैज्ञानिक विषय
(छ) सामाजिक विज्ञान के विषय

इन पुस्तकों के निर्माण में हम प्रसिद्ध लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर भाषा, शैली और विषय-विवेचन की दृष्टि से सामूहिक विचार करके इसे अंतिम रूप दिया जाएगा।

परिषद् इस माला की पुस्तकों को लागत-मूल्य पर ही प्रकाशित कर रही है ताकि ये अपने देश के सभी कोनों में पहुँच सकें। भविष्य में इन पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की भी योजना है।

हम आशा करते हैं कि शिक्षा क्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्य की भाँति ही परिषद् की इस योजना का भी व्यापक स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखन के लिए डा. श्याम सिंह 'शशि' ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया, जिसके लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। जिन-जिन विद्वानों अध्यापकों और कलाकारों से इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में हमें सहयोग मिला है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

परिषद् में यह योजना प्रो० अनिल विद्यालकार (अवकाश प्राप्त) के मार्गदर्शन में चल रही थी। उनके सहयोगियों में श्रीमती संयुक्ता लूदरा, डा० रामजन्म शर्मा, डा० सुरेश पाण्डे, डा० हीरालाल बाछोतिया और डा० अनिरुद्ध राय सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। विज्ञान की पुस्तकों के लेखन का कार्य हमारे विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के डा० रामदुलार शुक्ल देख रहे हैं। योजना के संचालन में डा० बाछोतिया विशेष रूप से सक्रिय रहे हैं। मैं अपने सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

इस माला की पुस्तकों पर बच्चों, अध्यापकों और बच्चों के माता-पिता की प्रतिक्रिया का हम स्वागत करेंगे ताकि इन पुस्तकों को और भी उपयोगी बनाने में हमें सहयोग मिल सके।

पी०एल० मल्होत्रा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

विषय-क्रम

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

1

पंख और तीर

अरुणाचल प्रदेश में घने जंगल हैं। वर्षा भी खूब होती है। इन जंगलों में बड़े खूँखार हाथी पाए जाते हैं। बहुत पुराने जमाने की बात है। एक साल खूब वर्षा हुई। जंगल में साँप, बिच्छू व दूसरे जहरीले जीव पैदा हो गए। कँटीली झाड़ियों से जंगल पट गया। रास्ते बंद हो गए। ऐसी हालत में विशालकाय हाथियों को घूमने-फिरने में कठिनाई होने लगी। एक दिन सारे हाथी मिलकर ब्रह्माजी के पास गए। उन्होंने अपनी मुसीबत बताई और ब्रह्माजी से प्रार्थना की– "भगवन्, हम आपके बनाए जीव हैं। आप हमारी रक्षा करें। पक्षियों की तरह हमें पंख लगा दें, ताकि हम उड़कर इधर से उधर आ-जा सकें।"

ब्रह्माजी के दरबारियों ने यह सुना तो खिलखिलाकर हँस पड़े– "इतना भारी-भरकम शरीर और पक्षियों वाले पंख।" उन्होंने ब्रह्माजी से कहा– "प्रभु, हाथियों की बात मत मानिए। बड़ा अनर्थ हो जाएगा। अगर कोई हाथी उड़कर किसी छप्पर पर बैठ गया, तो न जाने कितनी जानें चली जाएँगी।"

हाथियों का बुरा हाल था। एक बूढ़ा हाथी उठा और तेजी से अपनी सूंड घूमाकर बोला– "महाराज, ये सब हमारी जान लेने पर तुले हैं। धरती के जहरीले जीवों ने हमारी नाक में दम कर रखा है। आप अगर हमें पंख नहीं देंगे, तो हमारी सारी की सारी नस्ल ही खत्म हो जाएगी।" और सारे हाथी भूख हड़ताल पर बैठ गए।

ब्रह्माजी का दिल पसीज गया। उन्होंने तुरंत आदेश दिया– "इस प्रदेश के सभी हाथियों के पंख लगा दिए जाएँ।" देखते-देखते हाथियों के पंख उग आए। अब क्या था! हाथी आकाश में उड़ने लगे। जब जी में आता, किसी पेड़ के ऊपर जा बैठते। जब मन करता, किसी पहाड़ की चोटी पर जाकर लेट जाते।

एक बार किसी लकड़हारे ने एक हाथी को गाली दे दी। वह गुस्से में लाल-पीला हो गया। उड़कर लकड़हारे की झोंपड़ी पर जा बैठा। नीचे उसके बच्चे सो रहे थे। धम्म की आवाज़ हुई। बच्चों ने जोर से एक चीख मारी। बात की बात में झोंपड़ी टूट गई। हाथी नीचे आ गिरा। दो लड़कियों को छोड़कर सब बच्चे नीचे दब गए।

लड़कियाँ रोती-चिल्लाती जंगल की ओर भागीं। एक दिन नागा जनजाति के कुछ शिकारी उधर जा पहुँचे। लड़कियों ने उनको हाथियों की करतूत बताई। उन्होंने अपने भाले सँभाले। वे जैसे ही हाथियों पर भाले से वार करते, हाथी उड़कर पेड़ों पर जा बैठते। आकाश में उड़ जाते। बहुत देर तक लड़ाई होती रही। हाथी हार माननेवाले नहीं थे। उन्होंने नागाओं के गाँव के गाँव उजाड़ दिए।

नागा पुरुषों के साथ-साथ उनकी बहुत-सी स्त्रियाँ भी इस लड़ाई में मारी गईं। डरे हुए बच्चे घरों से बाहर निकल आए। हाथियों के डर से झाड़ियों में छिपने लगे। काँटों से उनके शरीर लहूलुहान हो गए। दूर खड़ी दोनों लड़कियाँ यह सब देख रही थीं। उनकी आँखों में क्रोध के अंगारे फूट रहे थे। एक दूसरे से कहने लगीं— "इस तरह हम नष्ट हो जाएँगे। हाथियों का ही राज्य हो जाएगा। हमें इनसे बदला लेना चाहिए।" देर तक वे दोनों सोचती रहीं। फिर उन्हें एक उपाय सूझ ही गया उन्होंने झाड़ियों में छिपे बच्चों को बुलाया। उन्हें दिलासा दिया। फिर गुलेलें तैयार कीं। हर बच्चे के हाथ में एक-एक गुलेल थी। बच्चों ने कुछ नुकीले पत्थर भी इकट्ठे कर लिए थे।

उन लड़कियों से बच्चों ने कहा— "हम लोग झाड़ियों के पीछे छिपकर हाथियों पर वार करें।" लड़कियाँ अपनी गुलेल ताने आगे चलीं। बच्चे पीछे-पीछे थे। सामने से हाथियों का झुंड आता दिखाई दिया। बच्चों ने अपनी-अपनी गुलेल तानकर हाथियों पर सीधा वार किया। नुकीले पत्थरों की चोट की। उड़ते हुए हाथी भी गुलेल की मार से बच न सके। हाथी घायल होने लगे। बहुत-से हाथियों के पंख भी टूट-टूटकर गिर गए। ब्रह्माजी को युद्ध की खबर पहुँची। वह स्वयं धरती पर आए। बच्चों के साहस को सराहा और हाथियों को डाँटने लगे। दोनों लड़कियों ने ब्रह्माजी से कहा— "पितामह, हम सब आपकी संतान हैं। फिर यह अन्याय क्यों?"

"कैसा अन्याय?" ब्रह्माजी ने अचकचाकर पूछा।

"आपने हाथी जैसे विशालकाय जानवर के पंख लगाकर अन्याय ही तो किया है। वे उड़-उड़कर हमारे घरों पर बैठ जाते हैं। उनके भार से घर गिर जाते

हैं। पंख तो छोटे पक्षियों को ही शोभा देते हैं। आपने देखा होगा, पंख पाकर हाथियों ने क्या तूफान मचाया है। पहले हाथी जंगल में रहते थे। अब गाँव में आकर तबाही मचाने लगे। या तो आप हमारे भी पंख लगा दें या फिर हाथियों के पंख वापस ले लें।

ब्रह्माजी ने पीठ थपथपाकर लड़कियों के साहस की प्रशंसा की। उन्होंने तुरंत हाथियों के पंख गायब कर दिए। फिर कहा– "हाथियों ने जो किया है उसका फल भी उन्हें भुगतना पड़ेगा। अब से हाथी जंगलों में रहेंगे। आबादी में रहना चाहेंगे, तो उन्हें मनुष्य का सेवक बनकर रहना पड़ेगा।" –इतना कहकर ब्रह्माजी अंतर्धान हो गए।

पंख चले जाने से हाथी बहुत निराश हुए। दोनों बहनें अपनी जीत की खुशी में मुसकराने लगीं।

(अरुणाचल प्रदेश की एक लोककथा)

2

रुपहली डायन

सारस तेज आवाज करता उठा। सारी घाटी गूँजने लगी। सारस क्या था, पूरा शेर जैसा आकार हो गया था। उसका शरीर भी अजीब और आवाज़ ऐसी, जैसे शेर की दहाड़ हो। गाँव के बच्चे उसे देखकर डर रहे थे। वह जंगल से गुजरा, तो दूर पेड़ पर कोयल बैठी थी। उसने सारस को पहचान लिया। बोली– ''क्यों रे सारस, आज होश खो बैठा है क्या? कल तक मुझसे राम-राम किए बिना नहीं जाता था। आज बात भी नहीं कर रहा है। बड़ा घमंडी बन गया है तू?''

सारस दो पल के लिए रुका। फिर बोला– ''देखती नहीं। अब मैं पहले जैसा नहीं रहा। बाबा ने वरदान दिया था। इसीलिए शेर जैसा बन गया हूँ। अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता।''

उस जंगल के दूसरे पक्षियों ने भी उसे बुलाया। अपने साथ कुछ पल रहने को कहा। सारस सभी की बात अनसुनी करके उड़ चला। परी लोक अभी तीन मील दूर था। अंगारों की बारिश होने लगी। एक अंगारा सारस की बाईं आँख में लगा और एक पंख पर। उसकी बाईं आँख फूट गई। एक पंख भी चला गया।

परी देश की महारानी दूर से ही सब देख रही थी। महारानी की अंग रक्षिका परी बोली– ''देखो न, महारानी। यह सारस भी परी लोक घूमना चाहता है। यह मुँह और मसूर की दाल।''

हरे पंखों वाली परी बोली– ''हम इसका कचूमर निकाल देंगी। यहाँ नहीं घुसने देंगी।''

महारानी ने कहा-- ''घबराओ नहीं। इसे यहाँ तक आने ही नहीं दूँगी। दूर से इसे शिला बना देती हूँ।'' महारानी ने एक तिनका सारस की ओर फेंका। वह तुरंत शिला बन गया।

सारस का एक अजगर दोस्त था। बाबा के वरदान से आज उसके भी पंख लग गए थे। वह भी आसमान में उड़ने लगा। उसे उड़ता देख, पशु-पक्षी भय से काँपने लगे। भला, ऐसा कभी हो सकता है। अजगर जो ढंग से चल फिर भी न सके हवा में उड़ता फिरे।

अजगर उड़कर पर्वत की एक चोटी से दूसरी चोटी पर छलाँगें मारने लगा। पल में यहाँ, पल में वहाँ पहुँच जाता। उसके सिर पर मणि भी थी। उसकी रोशनी से सारा जंगल जगमगाने लगा था।

अजगर घमंड में फूला था। अकड़ में इधर-उधर घूम रहा था। उसे देख, एक कोबरा बोला— ''अजगर भाई, आज कहाँ का धावा है? बड़ी अकड़ दिखा रहे हो? इतना रोब-दाब तो कभी नहीं देखा?''

कोबरा पुकारता रहा। वह बिना उत्तर दिए, हवा में उड़ गया। वह भी परी लोक देखने को बेचैन हो गया था। वह परी लोक के पास पहुँच भी न पाया, तभी नौरंगी परी ने दूर से उसे देख लिया। वह अपनी सहेली से बोली— ''मैं इसे अभी मजा चखाती हूँ। मेरे नागपाश से बचकर कहाँ जाएगा?'' इतने में महारानी आ गई। वह बोली— ''नौरंगी, तुम अपना नागपाश सम्भाल कर रखो। मैं इसको अभी शिला बना देती हूँ।'' और अजगर भी तुरंत शिला बन गया।

सारस और अजगर जिस जंगल में रहते थे, वहीं एक आदिवासी का डेरा था। लोगों का विश्वास था कि उसकी पत्नी डायन है। वह रात को अपनी चारपाई पर झाड़ू रख अपना रूप बदलकर चली जाती थी। रूप बदलने में उसका जवाब नहीं था। कभी मक्खी बनती कभी भेड़िया, तो कभी कुछ और। इसीलिए वह ''रूपहली डायन'' के नाम से मशहूर थी। जंगल में जाकर नाचती-गाती। वहीं उसे सारस और अजगर भी मिल जाते थे।

उस रात भी वह जंगल में पहुँची। उसे न सारस मिला और न ही अजगर। एक चूहे ने उसे सारा किस्सा बता दिया। सुनकर वह गुस्से से भर गई। उसने कहा— ''आज मैं परी लोक को तहस-नहस कर दूँगी। देखती हूँ, वहाँ की परियाँ कितनी बलवान हैं।'' वह क्रोध से आग बबूला हो गई। परी लोक की तरफ चल दी। वह दो मील ही चली थी कि बाज बन गई। चार मील चली, तो आंधी बन गई और फिर मूसलाधार बारिश।

परियों ने देखा, एक डायन परी लोक में आ रही है। वे आश्चर्य में पड़ गईं। कभी सोचा भी नहीं था कि डायन यहाँ आ सकती है। डायन को रास्ते में दो मेमने मिले। उन्होंने कहा— ''मौसी, आज परी लोक की पूजा करोगी क्या? तुम्हारा

काम तो लोगों को खाना है। फिर आज पूजा की क्या जरूरत पड़ गई?" डायन ने आव देखा न ताव। दोनों की गर्दन मरोड़ दी।

अब परी लोक एक मील रह गया था। सुरसा की तरह उसका मुँह फैलता जा रहा था। उसके मुँह में ज्वालामुखी-सा धधक रहा था। परियाँ भी उसे देख, घबरा उठी थीं। वे महारानी के पास गईं। महारानी ने कहा— "घबराओं नहीं, मैं इसका घमंड अभी चूर करती हूँ।" महारानी ने अपने सुनहरे पंख लगाए। उड़ चली डायन की ओर। डायन उसे अपनी ओर आती देख, क्रोध से बड़बड़ाने लगी। महारानी अपने साथ शांति अस्त्र लाई थी। उसने अस्त्र छोड़ दिया। डायन जहाँ थी, वहीं रुक गई।

"अरी, ओ डायन। लौट जा वापस। बेकार हमसे युद्ध का खतरा मोल न ले। देख, तेरे साथियों का क्या हुआ। हम नहीं चाहते कि तेरा भी वही हाल हो।" — महारानी ने चेतावनी दी। डायन का शरीर तो जड़ हो गया था, किंतु मुँह बंद न हुआ। वह बोली— "तू मेरे दोनों साथियों को फिर वैसा ही बना दे, तो जाऊँ। नहीं तो तेरे परी लोक को तहस-नहस कर दूंगी।" महारानी ने बहुत समझाया। पर डायन तो डायन थी। मुँह से विष उगलती रही। अनाप-शनाप बोलती रही।

हारकर महारानी बोली— "तुझे इतना ही प्यार है अपने मित्रों से, तो जा, पेड़ बनकर उनके बीच खड़ी हो जा। तपती धूप में वे दोनों शिलाएँ तेरी छाया पाकर गर्म नहीं होंगी।" कहकर महारानी ने फिर एक तिनका फेंका। दोनों शिलाओं के बीच एक पेड़ खड़ा हो गया। सुनते हैं, आज भी वह डायन पेड़ बनी, परी लोक में खड़ी है।

(हिमाचल प्रदेश की एक लोककथा)

3

ऊँट और चूहा

थार के रेगिस्तान में कभी ऊँटों के झुंड रहते थे। कुछ के नाक में नकेल भी होती थी। मालिक उन्हें पहनाकर यों ही चरने को छोड़ देते थे। दूर-दूर तक रेत-ही-रेत थी। जहाँ कहीं घास-फूस दिखाई पड़ता, ये ऊँट उधर ही चल पड़ते। जब वहाँ का चारा समाप्त हो जाता तो फिर और आगे बढ़ जाते। इस प्रकार उन्होंने लगभग सारा क्षेत्र चर लिया। उसके बाद मीलों तक हरियाली नहीं थी। अब उनका इकट्ठा रहना कठिन हो गया। उनका झुंड तितर-बितर हो गया। ऊपर से तपती धूप और नीचे आग उगलती बालू। क्या करें! कहाँ जाएँ बेचारे! पानी का तो कहीं नाम-निशान ही नहीं था। जो कुछ भी उन्होंने अपनी थैली में भरा था वह भी समाप्त होने लगा।

एक ऊँट उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा। कुछ दूर तक तो उसे रेत-ही-रेत मिली। वह भूख के मारे परेशान था। तभी उसे एक खरगोश दिखाई पड़ा। वह उसी तरफ आगे बढ़ता गया। उसे कुछ चूहे भी दिखाई पड़े। उसने सोचा, वह शायद ठीक जगह पहुँचनेवाला है। उसने हिम्मत नहीं हारी। आगे भी कुछ पेड़ दिखाई पड़े। उसके पाँव और तेज गति से चलने लगे। पेड़ों पर कुछ पक्षी चहचहा रहे थे। उसे लगा, वह किसी जंगल के पास पहुँच गया है। लेकिन रेगिस्तान के पास जंगल कहाँ से आ गए? उसके मन में यह शंका भी थी— मृगमरीचिका जैसी।

वह एक पेड़ के पास पहुँच गया। उसने अपनी लम्बी गर्दन को ऊपर उछाला और जल्दी-जल्दी पत्ते मुड़कने लगा। बल-बल की आवाज़ में वह अपनी खुशी प्रकट कर रहा था। वह स्वर्ग जैसा सुख ले रहा था।

उसने पेड़ की कई शाखाओं के पत्ते खा लिए। तभी एक चूहा उधर से आया
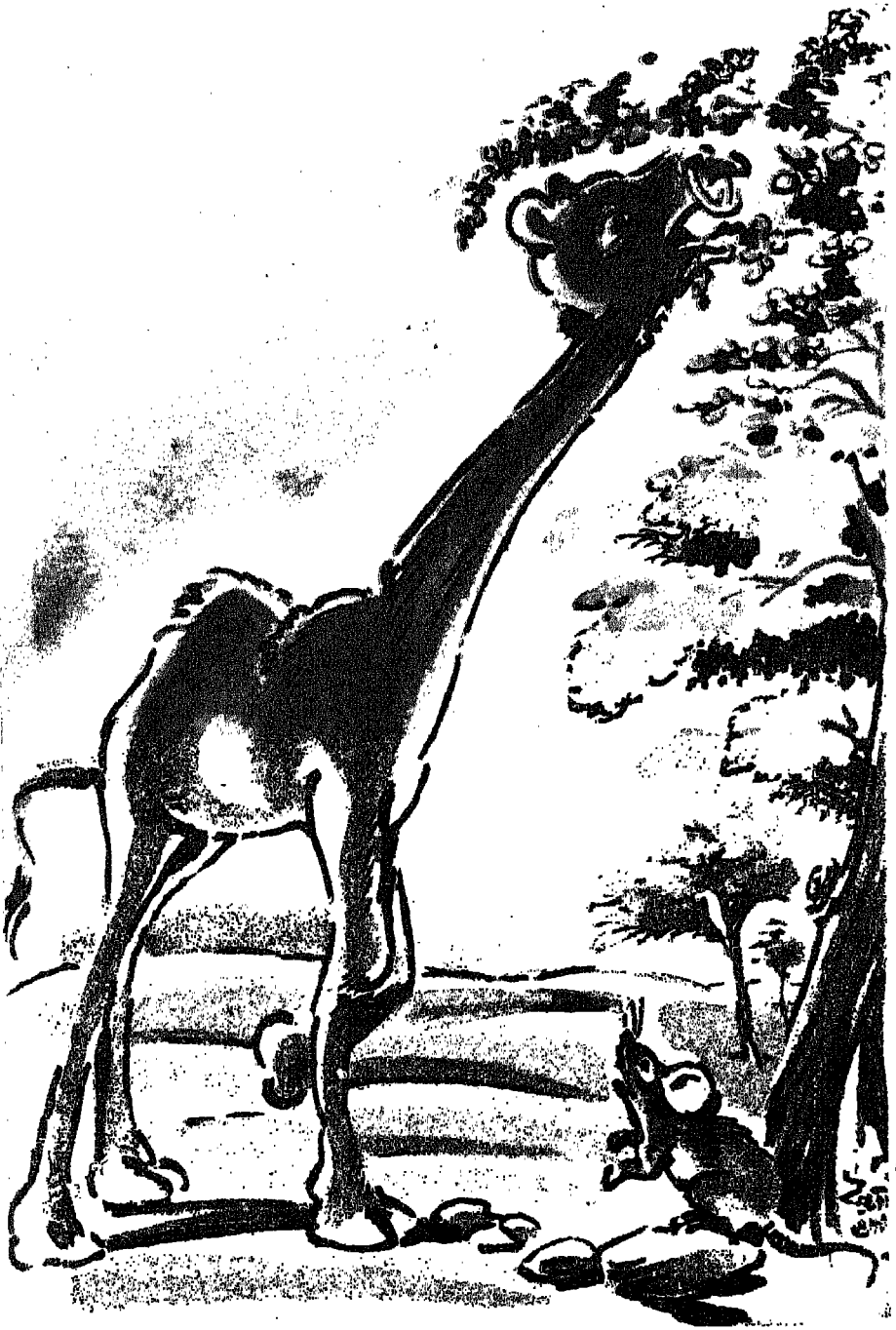
और उससे बोला ''ऊँट भाई, इतनी जल्दी क्यों चबा रहे हो? क्या एक ही दिन में सारा वृक्ष खाने का इरादा है? अगर तुम्हारे दूसरे भाई भी इसी तरह यहाँ आ गए तो अपना तो बस कबाड़ा ही हो जाएगा। दूसरे पशुओं के लिए कुछ भी नहीं बचेगा।''

ऊँट ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसे तो कई दिन के बाद ऐसा भोजन मिला था। वह चरने में मस्त था।

चूहे ने फिर प्रश्न किया। बोला— अरे ऊँट भाई, मेरी बात का जवाब नहीं दिया। चलो जवाब मत दो मगर बताओ क्या मुझ से दोस्ती करोगे? मैं मित्रता का हाथ बढ़ाने में पहल कर रहा हूँ। तुम्हारी मुसीबत में मैं सहायता करूँगा।

ऊँट ने जबड़ा खोला और हँस कर बोला— अरे बुद्धू, दोस्ती और तेरे साथ। तू भला मेरी क्या सहायता कर सकता है?

ऊँट दूसरी शाखा की ओर बढ़ा। अचानक उसकी नाक की नकेल शाख के साथ उलझ गई। वह उसे छुड़ाने का प्रयत्न करता, किंतु नकेल और उलझ जाती। चूहे ने जब ऊँट की चीख सुनी तो वह उसके पास दौड़ा-दौड़ा आया और बोला— ''दोस्त, चिंता न करो, तुम्हारी मुसीबत अभी दूर कर देता हूँ।'' चूहा पेड़ पर आनन-फानन में चढ़ गया और नकेल को कुतरने लगा। धीरे-धीरे वह कट गई और ऊँट की जान में जान आई। चूहा बोला, ''क्या अब भी दोस्ती नहीं करोगे?''

ऊँट बड़ा शर्मिन्दा था। उसने कहा, ''भाई, मुझसे गलती हुई। मैंने तुम्हें यों ही छोटा समझ लिया। लेकिन तुम तो मुझसे भी बड़े बन गए। मुझे क्षमा करो। आज से तुम मेरे दोस्त ही नहीं, बल्कि स्वामी भी हो। क्योंकि आज तुम न होते, तो मेरे प्राण पखेरू उड़ गए होते। दोनों ने एक दूसरे से विदा ली।

ऊँट जंगल में बड़े मजे में रहने लगा। वह अपना रेगिस्तान लगभग भूल गया था। एक दिन वह बबूल के पत्तों पर पिला हुआ था। प्रत्येक वृक्ष के पत्तों का अलग-अलग स्वाद मिलता है। वह रोज वृक्ष बदलता और जो जी में आता खाता।

अचानक किसी राजा की सेना उधर से गुजरी और उसी जंगल में पड़ाव डाल दिया। सेना में घोड़े और ऊँट भी थे। एक सिपाही शाम को घूमने निकला। उसने जंगली ऊँट को देखा तो सोचने लगा— शायद कोई ऊँट पीछे छूट गया है। वह उसकी तरफ बढ़ा। उसकी नाक नकेल रहित देखी तो आश्चर्य हुआ। उसने पूछा— तुम्हारा मालिक कौन है?

ऊँट बोला, ''मेरा मालिक चूहा है।''

सिपाही ने जोर से ठहाका लगाया और कहा, "चूहे कब से ऊँट पालने लगे?" ऊँट कुछ नहीं बोला और चल पड़ा। लेकिन राजा के दूसरे सिपाही भी वहाँ पहुँच गए। उन्होंने ऊँट को पकड़ लिया। एक ने नाक में नकेल डाल दी और दूसरा उसे कोड़े लगाता हुआ राजा की फौज में ले आया।

चूहे को पता चला तो उसने अपनी बिरादरी को इकट्ठा किया और एक जोशीला भाषण दिया। वह बोला, "दोस्तो, आज एक राजा के सिपाही ने मेरे ऊँट को पकड़ लिया है। आप तो जानते ही हैं कि वह मेरा दोस्त ही नहीं बल्कि भाई से भी बढ़कर है। उसकी रक्षा करनी है। हम किसी से कम नहीं हैं। देखने में छोटे लगते हैं तो क्या हुआ, हमारे पास बुद्धि तो है। बस संगठन की ज़रूरत है। आओ, सब मिलकर एक हो जाओ और आगे बढ़ो।

चूहों की फौज लड़ाई के लिए तैयार हो गई। ऊँट का स्वामी सबसे आगे था। सब चूहे राजा के पास पहुँचे। ऊँट के स्वामी ने राजा को ललकारा और कहा, "राजा, तूने मेरे दोस्त को बंदी बना रखा है। मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ। अगर ऊँट को तुरंत मुक्त नहीं किया तो हम सब आक्रमण करेंगे और बदला लेंगे।"

राजा खिलखिलाकर हँसा, अरे तुम चूहो, लड़ने चले हो। यह मुँह और मसूर की दाल। जाओ अपना रास्ता लो। ऊँट तुम्हें नहीं मिलेगा।

चूहों ने कहा, "हम लड़ेंगे और जीतेंगे भी।"

रात को सब चूहे अस्तबल में पहुँचे और उन्होंने घोड़ों तथा ऊँटों की काठियाँ कुतर डालीं। कुछ नकेलों की तरफ बढ़े और उन्हें भी काट डाला।

अगले दिन राजा को शत्रु पर हमला करना था, लेकिन जब उसने देखा कि उसके घोड़े तथा ऊँट लड़ाई में जाने योग्य नहीं रहे तो सिर पीटकर रह गया। शत्रु की सेना आ गई। राजा हार गया। उसे बंदी बना लिया गया। उसके सभी पशु भाग गए। इसी बीच चूहे का दोस्त भी छूट गया। वह अपने रेगिस्तान की तरफ चल पड़ा। उसे अब यह जंगल खाने को आ रहा था। चूहों ने उसका स्वागत किया और खुशी-खुशी विदा किया।

ऊँट ने कहा, "चूहे राजा, आओ मेरी पीठ पर बैठो। मेरे साथ मेरे देश चलो। तुम कितने महान हो मेरे भाई।"

चूहा बोला, "जाओ दोस्त, सब को अपना जन्म-स्थान अच्छा लगता है। हमें तो यह जंगल ही प्यारा है। पर एक बात याद रखना भविष्य में छोटे-बड़े या ऊँच-नीच की भावना दिल में मत रखना।"

(राजस्थान की एक लोककथा)

4

ियरा दो महीने का बालक था। मगर वह सेर भर दूध पीता था। फिर खाना भी ाने लगा। वह भी ढेर सारा। सभी आश्चर्य से उसे देखते। कहते– ''वाह, बालक तो पूरा दैत्य लगता है।''

तीन महीने का होते ही वह पेड़ पर चढ़ने लगा। माँ पुकारती– ''उतर आओ बेटा! छोटे हो। गिर पड़ोगे।'' पर वह कहाँ मानने वाला था। पेड़ पर चढ़कर इधर-उधर उछलता। बंदर की तरह खों-खों करके शोर मचाता। उसके लिए डलिया भर रोटी, बालटी भर दूध आता, तब कहीं नीचे उतरता।

माँ ने एक ओझा बुलवाया। उसने कहा, ''यह बच्चा अद्‌भुत लक्षण लेकर आया है। पिछले जन्म में यह कोई दैत्य था। इसकी वजह से गाँव को खतरा पैदा हो सकता है। खास किस्म की एक पूजा होगी। तभी यह बालक दूसरे बालकों की तरह बन सकेगा।''

पूजा की तैयारियाँ होने लगीं। गोयरा के मामा सामान लेने दूर बाजार में गए। रास्ते में भयानक जंगल पड़ता था। वहाँ उन्हें एक दैत्य मिला। वह उसके मामा को कौर-सा निगल गया। गोयरा की माँ बाट जोहती-जोहती थक गई। गाँव के लोग परेशान थे।

गोयरा बचपन से ही ज़ंगली हाथियों की सवारी करने लगा था। शेर का शिकार भी करने लगा। अखाड़े में बड़े-बड़े पहलवान उसके सामने भीगी बिल्ली बन जाते। एक दिन उसे अपने मामा के बारे में पता चल गया। क्रोध से भर, वह धनुष-बाण ले, दैत्य से लड़ने चल दिया। सब भयभीत थे कि अब क्या होनेवाला है। दैत्य ने गोयरा को दूर से ही देख लिया। वह बिजली की तरह चमका और बादल की तरह गरजा। उसके मुँह से आग निकल रही थी। जबड़े पहाड़ी गुफा की

तरह फट गए थे। एक भारी पेड़ उखाड़, दैत्य गोयरा की तरफ भागा।

गोयरा ने एक तीर छोड़ा। तीर दैत्य के मुँह को चीरता हुआ निकल गया। फिर गोयरा ने अपना आकार बढ़ाया। बरगद के वृक्ष की तरह मोटा होता गया। दैत्य का पेड़ उसके हाथ में आकर टिक गया।

कई दिन तक युद्ध होता रहा। इस लड़ाई के कारण गोयरा पहाड़ियाँ फटने लगीं। शिलाओं में दरारें पड़ गईं। सुनते हैं, सात साल तक भयंकर युद्ध चलता रहा। दोनों लहूलुहान हो गए। दैत्य जिधर भी भागता, गोयरा उसका पीछा करता।

आठवें वर्ष की पहली सुबह दैत्य हार गया। गोयरा ने उसे उठाकर पटक दिया। उसके गिरते ही जोर का धमाका हुआ। गोयरा ने उसका पेट चीर डाला। आश्चर्य से देखा, उसके पेट से उसका मामा निकला। गोयरा की खुशी का ठिकाना न रहा। उसे पीठ पर बैठाकर वह ले आया। सारे गाँव में उल्लास का वातावरण छा गया।

इसके बाद गोयरा गाँव में नहीं रहा। एक दिन गाँववालों ने देखा– गोयरा के दोनों हाथ पंख बन गए हैं।

वह आकाश की ओर उड़ने लगा। गाँववालों से बोला– "मैं तुम्हारे लिए दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ– बिजली और गर्जन। बिजली में तुम्हें मेरी झलक दिखाई देगी। बादल के गर्जन में मेरा स्वर सुन सकोगे।" यह कह, गोयरा उड़ गया।

(एक गारो लोककथा)

5

[illegible]

हिमालय की गोद में बसा था एक गाँव। शिकारी बहुत थे वहाँ। लेकिन हिम्मतवाले बस एक-दो ही थे। एक दिन न जाने किसने चट्टान पर भेड़िए का चित्र बना दिया। थोड़ी देर बाद कोई दूसरा आदमी आया। उसने पाँच पैर, तीन आँखें और चार कान बना दिए। तीसरा आदमी उधर से गुजरा, तो उसने उसके सिर पर दो सींग निकाल दिए।

कुछ महिलाएँ लकड़ियाँ बीनती हुई आईं। चित्र को देखते ही डर से काँप उठीं। उन्होंने गाँव में लौटकर लोगों को बताया— "जंगल में एक भयंकर जानवर आया है उसके पाँच पैर हैं, तीन आँखें हैं और चार कान।" अफवाह एक गाँव से दूसरे गाँव और फिर सभी जगह फैल गई। लोग डर के मारे घर से बाहर नहीं निकलते थे।

एक दिन एक लोमड़ी उस तरफ गई। चित्र को देखा, तो खूब हँसी। सामने ही एक बूढ़ा भेड़िया बैठा था। बोला— क्यों बहन, आज इतनी खुश क्यों हो? क्या कोई तगड़ा शिकार मिल गया है?"

लोमड़ी बोली— "हाँ, भैया! अब सबसे बड़ा शिकार यहाँ का आदमी होगा। यह देखो, एक अजीब भेड़िए की शक्ल। भला, दुनिया में ऐसा भी कोई पशु होता है! लेकिन आदमी बुद्धू होते हैं, इसीलिए ऐसी कल्पना कर डाली।"

"आदमी होता ही डरपोक है। एक काम करोगे! तुम्हारे दादा की खाल अभी सुरक्षित है तुम्हारे पास। उसे तुम मुझे दे दो। मैं विचित्र भेड़िया बनकर शिकार किया करूँगी।"

—चालाक लोमड़ी ने प्रस्ताव रखा।

भेड़िए ने कहा— "मैं तो सचमुच में भेड़िया हूँ, फिर मैं ही शिकार क्यों न करूँ?"

लोमडी ने कहा– "तुम पाँच पैर, तीन आँखें तथा चार कान वाले भेड़िए नहीं बन सकते। यह बात तो मैं ही कर सकती हूँ। इसलिए जो मैं कहूँ, करते जाओ।"

भेड़िया अनमना-सा रहा। उसकी समझ में पूरी बात नहीं आई। उसने चुपचाप अपने दादा की खाल लोमड़ी को दे दी। बोला– "बहन, आधा हिस्सा तो मुझे दिया करोगी न?"

"हाँ, हाँ! क्यों नहीं।"– लोमड़ी उसे तसल्ली देकर चली गई।

अगले दिन लोमड़ी ने बूढ़े भेड़िए की मदद से खाल पहनी। उसने अपने जबड़े में बाँस की दो खपच्चियाँ लगा लीं। दो कानों से बाँध लीं। माथे के बीच में एक काला दाग बनाया, ताकि वह तीसरी आँख दिखाई पड़े।

"पर पाँचवाँ पैर कहाँ से लाओगी बहन?" – भेड़िए ने प्रश्न किया।

"तू तो बुद्धू का बुद्धू ही रहा। देख, अभी बताती हूँ।" –इतना कहकर लोमड़ी ने अपनी पूँछ नीचे लटका ली और बोली– "यह देख, पाँचवाँ पैर।"

एक दिन कोई शिकारी उधर से गुजरा। वह एक वीर पिता का डरपोक बेटा था। लोगों को दिखाने के लिए ही बंदूक लटकाए रहता था। उसने लोमड़ी को विचित्र भेड़िए के रूप में देखा, तो डर गया।

बंदूक हाथ से छूट गई। पेट के बल सरकने लगा। लोमड़ी उसकी हालत देखकर हँसने लगी।

शिकारी किसी तरह गिरता-पड़ता अपने घर पहुँचा। बिस्तर में मुँह छिपाकर लेट गया।

लोमड़ी के हाथ बंदूक लग गई थी। अब वह उसे बड़े रोब से लेकर घूमती और जंगल के सब पशुओं पर धौंस जमाती।

दिन बीतते गए। लोग डर के मारे घर से बाहर कम निकलते थे। शिकारी तो अधमरा-सा ही हो गया था। एक दिन उसने सोचा– क्यों न पास के गाँव में जाकर वहाँ के बूढ़े शिकारी से सलाह ली जाए। वह बूढ़े शिकारी के घर गया। सारी कहानी सुनाई। बूढ़ा शिकारी ठहाका मारकर हँसा। बोला– "अरे मूर्ख, भला ऐसा जानवर भी होता है कहीं?"

"नहीं, काका। आपकी सौगंध खाकर कहता हूँ। मैंने वह जानवर अपनी आँखों से देखा है। उसने मेरी बंदूक भी छीन ली थी।"

"हाँ, जिस शिकारी की बंदूक खो जाती है, वह अधमरा तो अपने आप ही हो जाता है। लेकिन तुम्हें भ्रम हो गया।" बूढ़ा बोला।

शिकारी निराश हो, अपने घर चला आया। उधर लोमड़ी के पास गोलियाँ खत्म हो गई थीं। एक दिन वह शिकारी के घर पहुँची। बोली– ''गोलियाँ दे दो। मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूँगी। वरना.....।'' शिकारी के होश उड़ गए। वह रजाई में दुबक गया।

लोमड़ी गोलियाँ लेकर बाहर निकली, तो खिलखिलाकर हँसी। शिकारी की बुद्धि पर तरस आ रहा था उसे। जाते-जाते वह उसकी मुर्गियाँ भी उडा लाई थी। लोमड़ी गोलियाँ तो ले आई, लेकिन उसे बंदूक में कैसे भरे... यही समस्या थी। भेड़िए ने भी कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली।

इस बार लोमड़ी ने बूढ़े भेड़िए को शिकारी के घर भेजा। वह उसे घसीटता हुआ लोमड़ी के पास ले आया। भेड़िया बोला– ''जंगल के राजा का हुक्म है, तुरंत बंदूक में गोलियाँ भरना सिखाओ। नहीं तो हम तुम्हारा शिकार करेंगे।'' शिकारी फिर गिड़गिड़ाने लगा।

तभी धाँय-धाँय की आवाज़ आई। लोमड़ी और भेड़िया चित्त हो गए। शिकारी भी बेहोश हो गया। तभी बूढ़ा शिकारी आया। उसे झकझोरते हुए बोला– ''उठ, डरपोक, यह देख! पाँच पैर, चार कान, तीन आँखें और लंबे सींगोंवाले भेड़िए की खाल।'' युवक पागल-सा देख रहा था। बूढ़े शिकारी ने फिर कहा– ''शिकारी जब डर जाता है, तो समझो वह मर गया।''

अब बात शिकारी की समझ में आ गई थी।

(उत्तराखंड की एक लोककथा)

सोचने लगे– "आखिर किसकी थी वह नाव? कौन खेता था उसे? कहीं भूत-प्रेत का चक्कर तो नहीं।"

एक सप्ताह तक नाव हर रोज आती रही। आठवें दिन जेठू ने देखा कि गायों की संख्या में घट-बढ़ होने लगी हैं। गायों की संख्या सुबह और शाम को निन्यानवे ही रहती, किंतु दिन में सौ हो जाती। देखने से कुछ पता नहीं चलता था कि उनमें नई गाय कौन-सी है। सब हैरान थे। इसके बाद से ही कुछ गायें बीमार रहने लगीं। अब वे दूध भी कम देती थी। न जाने क्या बात थी?

गाँव में तरह-तरह की अफवाहें फैल गईं। लोग कहने लगे कि झील के पास पशु नहीं चराने चाहिए।

यह देखकर जेठू ने मन-ही-मन भेद का पता लगाने का निश्चय किया। जादू और भूत-प्रेत की बात सुनकर भी वह नहीं घबराया। बहुत हिम्मती था वह।

कई रोज वह टोह में रहा। आखिर एक शाम उसने देखा, एक लड़की पहाड़ में बनी गुफा से बाहर निकली। एक गाय को लेकर फिर उसी गुफा में चली गई। जेठू भी लड़की के पीछे-पीछे चल पड़ा। द्वार पर पहुँचा, तो वहाँ उसे चाँदी के सिक्के पड़े मिले। एक बार मन में आया कि सिक्कों को उठाकर घर लौट जाए। न जाने गुफा के अंदर क्या हो। लेकिन अगले ही क्षण उसने अपने मन को पक्का किया और गुफा में बढ़ गया।

थोड़ी दूर जाने पर उसे सोने के सिक्कों से भरा एक कलश रखा दिखाई दिया। लेकिन इस बार भी जेठू ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। वह बढ़ता ही गया।

गुफा से बाहर निकला, तो उसने अपने को एक लंबे-चौड़े मैदान में पाया। वहाँ भी एक झील थी। उसमें पानी के बदले दूध भरा था। जेठू भौंचक्का सोचता रह गया– "यह क्या चक्कर है? इतना दूध आखिर आता कहाँ से है?"

सब तरफ सन्नाटा था। वह लड़की और गाय अब कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। जेठू झाड़ी के पीछे छिपा देखता रहा। इतनी देर बाद एक बात जेठू की समझ में आ गई थी– उसकी गायों के बीमार होने व कम दूध देने का संबंध झील से जरूर था।

दूध की उस झील में सफेद रंग के कुछ पशु लेटे थे। कुछ उड़नेवाली मछलियाँ भी थीं। एक गैंडे जैसा पशु था। एक बार तो वह कुछ हिचकिचाया, फिर बढ़कर दूध की झील के किनारे जा खड़ा हुआ। सोचता रहा– "क्या करना चाहिए?"

दूध तुरंत फट गया। थोड़ी ही देर में वहाँ दूध के बदले सफेद-सा पानी बहने

लगा। उसमें तैरते विचित्र जीव-जंतु भी उड़-उड़कर न जाने कहाँ जाने लगे।

जेठू को लगा, वह जिस काम के लिए आया था, वह हो गया है। अगर दूध की झील का कोई जादू था, तो उसने वह तोड़ दिया है।

वह तुरंत वापस मुड़ गया। रास्ते में पड़े सोने व चाँदी के कुछ सिक्के उसने उठा लिए। फिर जल्दी-जल्दी अपने साथियों के पास लौट आया।

सबने जेठू के साहस की प्रशंसा की। जेठू ने कहा– "हमें अभी इस गुफा का मुँह पत्थरों से बंद कर देना चाहिए। फिर उधर से कोई डर नहीं रहेगा।"

सब उसकी बात से सहमत थे। वे सब मिलकर भारी-भारी पत्थर लाए, फिर चूने का मसाला बनाकर रात-भर में गुफा का मुँह अच्छी तरह बंद कर दिया।

उस दिन से झील में कोई नाव दिखाई नहीं दी। गायों की संख्या भी कम-ज्यादा नहीं हुई। गाएँ फिर से स्वस्थ होकर भरपूर दूध देने लगीं।

अब गाँववाले जेठू का और भी सम्मान करने लगे। वे कहते– "जेठू ने अपनी हिम्मत से जादू को भी नाकाम कर दिया।"

(जौनसार बाबर की एक लोककथा)

7

सोने वाली गुफा

बहुत पुरानी बात है। सिंधु नदी के इस पार बंजारों के कुछ काफिले रहते थे। उनका काम ही घूमना था। उन दिनों न रेल थीं, न मोटरें। बंजारे घोड़ों पर अपनी सारी गृहस्थी लादकर चलते थे। जहाँ रात हुई, वहीं डेरा डाल देते। आँधी-तूफान में रहने की उन्हें आदत पड़ गई थी।

पंजाब के जाटों का ऐसा ही एक काफिला आल्प्स को पार करके जर्मनी पहुँचा। सिंधी लुहारों का दूसरा काफिला रूस में जाकर बस गया। उनमें कुछ लोग थे ज्योतिषी और कुछ रीछ-भालू नचाने वाले। यूरोप के लोग उन्हें जिप्सी कहकर पुकारते थे। उनसे घृणा भी करते थे।

एक बार क्या हुआ, किसी काफिले का बालक अपने माँ-बाप से बिछुड़ गया। दूसरे काफिले की किसी जिप्सी महिला ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। उसका नाम जानीसेक रखा गया।

जानीसेक काफिले के दूसरों बच्चों में खेलता। घर के कामकाज में हाथ बँटाता था। जिप्सी महिला को वह माँ कहकर पुकारने लगा। यूरोप के कई देशों में घूमने के कारण वह कई भाषाएँ सीख गया था, लेकिन अपने घर में हमेशा अपने देश की भाषा ही बोला करता था।

जानीसेक जिस जिप्सी महिला के साथ रहता था, वह न जाने कैसे किसी यहूदी जादूगर के चकमे में आ गई। जादूगर ने उससे कहा– "तुम इस लड़के जानीसेक को मेरे साथ भेज दो। मैं तुम्हें मालामाल कर दूँगा।"

जिप्सी महिला तो थी ही बेबस। जानीसेक के लाख आनाकानी करने पर भी उसने उसे यहूदी जादूगर को सौंप दिया। जादूगर उसे अपने साथ जंगल की ओर ले गया। वहाँ एक विचित्र गुफा थी। जानीसेक भयभीत था। जादूगर ने कहा– "डरो नहीं जानी, मैं तुम्हें सोने की गुफा में भेजूँगा। वहाँ एक जादुई ताला

मिलेगा। उसे लेकर मेरें पास चले आना। तुम्हें बहुत से खिलौने मिलेंगे। खाने के लिए बढ़िया केक मिलेगा। फिर मैं तुम्हें आज़ाद भी कर दूँगा। ''जादूगर ने छड़ी दिखाते हुए उसे गुफा का रास्ता बतलाया।

जानी परेशान था। जादूगर मीठी बातों से उसे फुसला रहा था। वह फिर बोला– ''बेटा, मैं तुम्हारे बाप के समान हूँ। तुम्हें गलत जगह नहीं भेजूँगा। जाओ, मेरे बेटे! जल्दी करो।''

जानी गुफा के निकट गया। उस पर पत्थर ढँका था। उसने ज्यों ही पत्थर पर पाँव रखा, धड़ाम से उसके भीतर गिर पड़ा। ऊपर से न जाने कैसे कोई शिला आ पड़ी। बस, एक बात अच्छी हुई कि ताला उसके हाथ आ गया था।

यहूदी जादूगर ने जब देखा कि जानी दब गया है। उसका लौटना मुश्किल है, तो वह परेशान हो उठा। उसे अब ताला नहीं मिल सकता था। कुछ देर ठहरकर वह अपने घर लौट गया। जिप्सी महिला को सारा किस्सा सुना दिया।

जानी पूरे साल तक उस गुफा में रहा। उसे न भूख लगी, न प्यास। वह सब जादुई ताले का कमाल था। साल पूरा होते ही होश में आया। उस दिन यहूदी जादूगर फिर उसके पास पहुँचा। जोर से चिल्लाकर बोला– ''मेरे प्यारे बेटे! ताले की चाबी घुमाओ। तुम्हें एक देव मिलेगा। उससे कहना, वह तुम्हें बाहर निकाल दें।''

जादूगर की बात सुन, जानी ने चाबी घुमाई। तुरंत एक देव आया और उसे बाहर निकाल लाया।

जादूगर जानी के लिए खाने की बहुत-सी वस्तुएँ लाया था। गुफा से निकलता देख, वह चिल्लाया– ''प्यारे बेटे, देखो तो, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ? जल्दी से इन्हें खा लो और मुझे ताला दे दो।''

''प्यारे पिता जी, खाना तुम ही खा लो, ताला तो अब मेरा है। तुम तो मुझे दबाकर चले गए थे।'' ... जानीसेक ने उत्तर दिया। फिर जल्दी से ताले में चाबी घुमा दी। इस बार एक साथ पंद्रह देव आकर उसके सामने खड़े हो गए। उनमें से दो सोने से लदे थे और दो चाँदी से। एक देव प्रोफेसर था। दूसरा एक इंजीनियर। दो डाक्टर भी थे। ऐसे देव कभी देखने-सुनने में नहीं आए थे।

सब एकसाथ बोले–''हुजूर, हम आपकी सेवा में हाजिर हैं। क्या हुक्म है?''

जानीसेक ने कहा– ''मुझे जल्दी से मेरे घर पहुँचा दो।''

जानी तुरंत अपने घर पहुँच गया। जिप्सी महिला ने दरवाज़ा खोला। देखा, जानी सामने खड़ा है।

"तुम आ गए बेटे! ताला ले आए न?" उसने पूछा।

"लेकिन यह ताला तुम्हें भी नहीं मिलेगा। तुमने मुझे उस जादूगर के साथ क्यों भेजा? तुम मेरी माँ नहीं हो।"— यह कहकर जानी ने घर से दूसरा ताला निकाला। उसे दरवाज़े पर लगाकर बाहर आ गया। जिप्सी महिला दरवाज़े के अंदर बंद हो गई। वह अपनी गलती पर पछता रही थी।

जानी ने जादुई ताला लिया। एक होटल की ओर चल पड़ा। वहाँ उसने नौकरी के लिए प्रार्थना की। लेकिन किसी ने भी उसे नौकरी पर नहीं रखा। वह थकामांदा एक पेड़ के नीचे सो गया। उसके पास कपड़े नहीं थे। ठंड के मारे वह काँप रहा था, पर किसी को उस पर दया नहीं आई। आखिर में उसने ताले में फिर से चाबी घुमाई। इस बार भी वे देव उपस्थित हो गए। एक साथ बोले— "हम हाजिर हैं हुजूर! क्या सेवा है?"

— "कोई सेवा नहीं। बस, कहीं काम दिला दो। मुझे नौकरी चाहिए। मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ; इसलिए होटल में वेटर का काम कर सकूँगा।"

सोने के देव ने कहा—"हुजूर, मुझसे सोना माँगा होता। यह नौकरी क्यों माँगी?"

प्रोफेसर देव बोला— "महाराज, मैं आपको बहुत बड़ी विद्या दे सकता हूँ।"

इंजीनियर देव बोला— "मैं आपके लिए महल बनाकर दे सकता हूँ।"

डाक्टर देव बोला—"मैं आपके नाम से बड़े-बड़े अस्पताल खुलवा सकता हूँ।"

नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे बस काम चाहिए, काम।" जानी ने चीखकर कहा।

जानी को काम मिल गया। अपनी मेहनत के बल पर उसने एक आलीशान मकान बनवाया। वह वेटर था, लेकिन लोग उसकी इज्ज़त करते थे। एक सुंदर जिप्सी लड़की ने उससे शादी कर ली। उसके लिए जानी ने सोने के ढेर सारे आभूषण बनवाए। उसे अपनी कमाई पर गर्व था।

लोग कहते थे कि जानी को अगर अकल होती, तो वह देवों से सोना-चाँदी माँगता। आलीशान महल बनवाता और लोगों पर शासन करता। पर वह किसी की परवाह नहीं करता था।

एक दिन जानी के घर से जादुई ताले की चाबी गुम हो गई। दुखी होने की बजाए, जानी दम्पती को इससे बड़ी खुशी हुई। लालच का झंझट ही ख़त्म हो गया था। उसने बहुत पैसा कमाया, आलीशान होटल खोले। अपने समय में शहर का सबसे धनी व्यक्ति था जानीसेक।

(एक जिप्सी लोककथा)

8

अंडमान को कभी काला पानी कहा जाता था। वहाँ कई जन-जातियाँ रहती हैं। जाखा आदिवासी आज तक रहस्य बने हुए हैं। सेंटिनल जन-जाति के लोग आदमी को देखते ही जहर बुझे तीरों की वर्षा शुरू कर देते हैं। वे बड़े खूँखार होते हैं। लेकिन उसी द्वीप में कुछ ऐसे आदिवासी भी हैं, जो शांतिप्रिय हैं। मध्य अंडमान में ऐसा ही एक आदिवासी कबीला पाया जाता है।

उस कबीले के मुखिया के तीन लड़के थे1 सबसे छोटा बड़ा शैतान था। उसका नाम था शुवान। वह बहुत तोड़-फोड़ करता रहता था।

एक दिन आदिवासियों की बस्ती में कोई चित्रकार आया। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। उसके एक हाथ में लंबी कूची थी। दूसरे हाथ में कई प्रकार के रंग। वह एक पेड़ की छाया में बैठ गया। उसने जल रंगों से भोज-पत्रों पर चार चित्र बनाए। गीले चित्रों को सूखने के लिए धूप में रखकर दूसरा चित्र बनाने लगा।

वह पाँचवाँ चित्र बनाने के लिए कुछ सोच ही रहा था कि अचानक उसका ध्यान पहले बनाए चित्रों की ओर गया। पास जाकर देखा, तो उसे अपने चित्रों के टुकड़े-टुकड़े मिले। चित्रकार का मन रो उठा। उसके चित्र देवताओं को समर्पित थे। वह सोचने लगा— "कहीं कुछ कमी तो नहीं रह गई। कहीं देवता तो नाराज नहीं हो गए।"

कलाकार परेशान था। तभी मुखिया का लड़का आकर उसके पास खड़ा हो गया।

कलाकार ने उसकी ओर देखा, तो वह बोला— "मैंने ही तुम्हारे भोज पत्रों को फाड़ा है।"

—"लेकिन क्यों फाड़ा तुमने?"

लड़के ने कहा– "सब बेकार की चीज़ें लग रही थी।" फिर हँसकर वहाँ से भाग गया।

चित्रकार की आँखें डबडबा आईं। वह उदास होकर वहाँ से चला गया।

उसी शाम मुखिया का लड़का अपने चाचा के साथ समुद्र तट की ओर जा रहा था। चाँदनी रात थी, लेकिन कभी-कभी बादल घिर आते और अँधेरा छा जाता। जंगल की साँय-साँय से भय का वातावरण बना हुआ था।

अचानक शुवान ने देखा कि चाचा कहीं गायब हो गए। आसपास खड़े पेड़ विचित्र किस्म के थे। किसी का तना कटा था। तो किसी के फल आधे थे। उस जंगल में शुवान पहले कभी नहीं आया था। वह भय से काँपने लगा।

तभी कुछ जंगली जानवर उसके पास से गुजरे। शुवान ने देखा, किसी का मुँह आधा था, तो किसी का धड़ गायब।

"चाचा, चाचा....."– शुवान चिल्लाया। पर उसकी मदद के लिए कोई नहीं आया। शुवान बड़ी तेजी से आगे बढ़ा। तभी एक पत्थर से ठोकर लगी और वह गिर पड़ा। वह फिर चीखा, लेकिन वहाँ कोई नहीं था।

एकाएक चाँद की मद्धिम रोशनी में उसने भोज-पत्र के कुछ टुकड़े देखे। शुवान ने बढ़कर टुकड़ों को उठा लिया। ये वही टुकड़े थे, जिन पर चित्रकार ने देवताओं के चित्र बनवाए थे। वह फटे चित्रों को जोड़ने लगा। फिर चट्टान पर वैसे ही चित्र बनाने का प्रयास करने लगा। पर उसके पास जल रंग कहाँ से आते। इसलिए कंकड़ से ही चित्रों को बनाने की कोशिश कर रहा था। शुवान अपने किए पर दुखी था। वह मन-ही-मन कह रहा था– "मैंने चित्रकार का दिल क्यों दुखाया? इतने अच्छे चित्रों को क्यों फाड़ा?

शुवान रोते-रोते कुल देवता से प्रार्थना करने लगा। उसके पिता भी अपने कुल देवता को याद किया करते थे।

शुवान ने देखा; एक जलपरी पानी में बार-बार उछल रही है। वह उसकी ओर बढ़ा।

"घबराओ नहीं शुवान। इधर आओ, मैं तुम्हें रंग देती हूँ। चित्रकार से भी बढ़िया। लेकिन वादा करो, फिर कभी किसी कलाकार का दिल नहीं दुखाओगे।...." जलपरी ने कहा।

"नहीं, अब ऐसा कभी नहीं करूँगा। मुझे जल रंग दीजिए। मैं वैसे ही चित्र बनाने की कोशिश करूँगा।" –शुवान के स्वर में आग्रह और पश्चाताप का भाव था।

परी ने भाँति-भाँति के जल रंग उसे दे दिए फिर वह अदृश्य हो गई। शुवान ने देवताओं के चित्रों में रंग भरे। वह काफी देर तक इस काम में लगा रहा। उसने किसी को अपनी ओर आते देखा। वह चाचा थे।

"चाचा, चाचा! तुम कहां चले गए थे?"

—शुवान अधीर होकर बोला।

"बेटा, मैं एक जंगली जानवर का पीछा करते हुए आगे निकल गया था। जब मुड़ा, तो तुम नहीं मिले। मैं इतनी देर से तुम्हें खोज रहा हूँ।

—चाचा ने कहा।

शुवान ने सारा किस्सा सुनाया। जलपरी की बात भी बता दी।

चाचा उसके साथ बस्ती की ओर लौट चले। अब उसे न कटे-फटे वृक्ष दिखाई पड़ रहे थे और न ही कटे-फटे पशु। सारा वातावरण ठीक हो गया था।

अगले दिन शुवान उन चित्रों को चित्रकार के पास ले गया। उसने जलपरी वाले रंग भी उसे सौंप दिए। क्षमा माँगी कि भविष्य में वह ऐसा कभी नहीं करेगा।

नए जल रंगों को देखते ही चित्रकार प्रसन्न हो उठा। वे रंग अद्भुत थे। उसने शुवान को क्षमा कर दिया।

(अंडमान की आदिवासी लोककथा)

9

पावी लोककथा

एक बार पावी जनजाति का एक युवा शिकारी अपने ही गाँव की किसी वन्य सुन्दरी पर मुग्ध हो गया। प्रेम गहराता गया और विवाह की तिथि तय कर दी गई।

पावी प्रेमी-प्रेमिका विवाह की तिथि की प्रतीक्षा में और भी अधीर होते गए और झूम खेतों में छुप-छुप कर मिलते। झूम खेती आज भी कई क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में विद्यमान है।

एक दिन बड़ी गर्मी थी। लड़की को जोर की प्यास लगी। उसने अपने प्रेमी से कहा कि वह पास के खड्ड पर जाकर अपनी प्यास बुझाना चाहती है। शिकारी ने उसे वहाँ जाने से मना किया क्योंकि उसे पता था कि वहाँ के पानी में कुछ जादू है जो व्यक्ति का रूप बदल सकता है।

युवती ने प्रेमी की सलाह मान ली किंतु अपनी प्यास पर काबू न पा सकी। वह उसी खड्ड पर पहुँच गई। उसने अंजुली भर कर पानी पिया और अपने प्रेमी के पास लौट आई।

प्रेमी अपनी प्रेमिका से अगले दिन मिलने के बारे में कुछ कहने ही वाला था कि अचानक प्रेमिका का रूप बदलने लगा। पहले उसके पाँव लंबे हुए फिर हाथ और फिर उनके चार पाँव बन गए। नाखून बड़े-बड़े हो गए और देखते ही देखते वह बाघ बन गई। जंगल का खूँखार बाघ। शिकारी घबरा गया। अपनी प्रेमिका को इस रूप में देखकर उसका हृदय विषाद से भर गया। उसे प्रेमिका पर क्रोध भी आया। उसने उसे उस खड्ड का पानी पीने से मना किया था। किंतु बहुत देर हो चुकी थी। क्या करता बेचारा। माथा ठोक कर घर की तरफ चल पड़ा। उसकी बाघ प्रेमिका भी पीछे-पीछे चलने लगी। लेकिन उसे गाँव में कैसे रखा जाता अतः पास के जंगल में छोड़ आया।

इस घटना से गाँव से सब लोग आश्चर्यचकित थे। लडकी के माता-पिता तो बहुत ही दुखी थे। उन्होंने अपने पशु बाघ लड़की को खाने के लिए भेजने शुरू किए। वह पूरा पशु एक या दो दिन में खा जाती। आखिर पशुओं की संख्या घटने लगी। उसने आदमियों का शिकार करना भी शुरू कर दिया।

गाँव के लोग घबराए हुए थे। उन्होंने बाघ लड़की को मारने की योजना बनाई। एक-दो बार कुछ शिकारी उसके पीछे दौड़े लेकिन सफलता न मिल सकी। एक शिकारी तो खुद उसका शिकार हो गया।

जंगल के हिंसक पशु घबराए हुए थे। गाँव के पशु तो पहले ही समाप्त हो गए थे। अब जंगल के पशु भी खत्म होने लगे। तूफान-सा मचा हुआ था। लोग त्राहि-त्राहि कर उठे।

आखिरकार गाँव के लोगों ने निर्णय किया कि बड़े शिकारी को ही यह काम सौंपा जाए। गाँव का मुखिया पंचों को लेकर उसके घर गया। उसने अनुरोध किया कि वह बाघ को यथाशीघ्र मार भगाए। शिकारी परेशान था। क्या उसे अपनी प्रेमिका का ही शिकार करना पड़ेगा? उसने गाँववालों से कहा— "मुझे गाँव से निकाल दो लेकिन यह जघन्य कर्म मुझसे न कराओ। मैं अपनी प्रेमिका को नहीं मार सकूँगा। भले ही वह बाघ बनकर पशुओं तथा आदमियों का शिकार कर रही हो।"

गाँव के लोगों ने कहा, "लेकिन वह अब तुम्हारी प्रेमिका कहाँ रही? वह तो क्रूर हिंसक पशु है जो अबला, वृद्ध सबको खाए जा रही है। कल हम भी जिंदा नहीं बचेंगे और एक दिन तुम भी उसके शिकार बन जाओगे।"

शिकारी तर्कों के आगे नहीं झुका। तभी एक वृद्धा आदिवासिन दौड़ी-दौड़ी आई। उसने कहा— "शिकारी बेटे, अब हमसे नहीं सहा जाता। तुम्हारी प्रेमिका बाघ पहले मेरे पशुओं को खा गई, फिर मेरे पति को और आज मेरा इकलौता बेटा भी उसकी बलि चढ़ गया। क्या अब भी तुम उस पर तरस खाते रहोगे?

शिकारी विवश था। उसने अपने शस्त्र उठाए और जंगल की ओर चल पड़ा। वह दुखी था। अपनी ही प्रेमिका का शिकार। लेकिन वह प्रेमिका कहाँ रही। वह तो स्वयं शिकारी बन गई है। आखिर एक शिकारी ने दूसरे शिकारी की जान ले ही ली। बाघ-प्रेमिका सदा के लिए सो गई। कुछ लोगों का कहना है कि शिकारी भी अपार दुख को सहन न कर सका और स्वयं वहीं अपने को भी ढेर कर दिया।

आज भी पावी जनजाति में इस लोकगाथा को बड़े दर्द के साथ स्मरण किया जाता है।

(एक पावी लोककथा)

10

बहुत घने जंगल हैं। उन जंगलों में आदिवासी रहते हैं। वहाँ उनके
त्र बसे हैं।

त्रनों में शेर, चीते और भालू आज़ादी से घूमते हैं। छोटे-छोटे बच्चों
। जाना उनके लिए मामूली-सी बात है। वहाँ साँप और बिच्छू तो
र मिलते हैं। इसीलिए कुछ आदिवासी लाठियों पर नदी की तरह
लाठियों में दो-तीन फुट ऊपर टैकें लगी रहती हैं। इन पर उनके
ते हैं।

त पुरानी बात है। एक लोमड़ी काठियावाड़ा गाँव में घुस गई। गाँव
खेतों और जंगलों में गए हुए थे। कोई माँ अपने बच्चे को चटाई पर
से घास का गट्ठर लेने चली गई। वापस आने पर देखा, तो बच्चा

माँ रोती-पीटती बच्चे को ढूँढने निकल पड़ी। लेकिन बच्चे का कुछ
।। गाँव के लोगों को खबर मिली तो वे भी परेशान हो गए, आखिर
कहाँ गया? कई लोग जंगल में भी गए। वहाँ खोजबीन की। लेकिन
नहीं चला।

में उस बच्चे को वह लोमड़ी ले गई थी। किसी की नजर उस पर न
त्ते ने उसे देखा था। वह उसके पीछे दौड़ा भी। जब तक कुत्ता पास
ी बच्चे को ले, संकरी गुफा में घुस गई।

अकेली थी। उसे बच्चा बड़ा प्यारा लगा। उसे बड़े प्यार से वह
अपना दूध पिलाती। रोता तो करतब दिखा-दिखाकर उसे
च्चा लोमड़ी को ही अपनी असली माँ समझने लगा।

मास-दो-मास और फिर साल बीतने को आया। बच्चे की असली माँ ने संतोष कर लिया था। मगर लोमड़ी उसे अपने कलेजे का टुकड़ा समझने लगी थी। खुद भूखी-प्यासी रहती, लेकिन अपने लाडले को सदा खुश रखती।

धीरे-धीरे बालक अपनी लोमड़ी माँ की तरह हाथ-पैरों पर चलना सीखने लगा। वह हाथों को भी पाँवों की तरह जमीन पर रखता। चौपाए की तरह छलाँगें भरता।

लोमड़ी बड़े प्यार से उसे अपने पास बुलाती। अपने साथ जंगल में ले जाती। शिकार करना और शिकार होने से बचना सिखाती। नंगधड़ंग बालक उसके साथ बंदर की तरह पड़ा रहता। उसे न सर्दी में जुकाम होता और न ही गर्मी महसूस होती। वह पूरा जंगली बनता जा रहा था।

एक दिन कुछ शिकारी जंगल से गुजर रहे थे। अचानक उन्होंने लोमड़ी और चौपाए बालक को देखा, तो हक्के-बक्के रह गए। एक शिकारी उनकी तरफ दौड़ा, मगर लोमड़ी तुरंत बच्चे को ले, पास की घनी झाड़ियों में लोप हो गई।

शिकारियों ने कई घंटे तक उनकी तलाश की। हारकर वे गाँव में आए। लोमड़ी और उसके विचित्र बच्चे के बारे में कई लोगों से पूछा गया। कुछ पता न लगा।

अब गाँव के लोगों में भी चर्चा होने लगी। आखिर लोमड़ी के साथ कौन रहता है? लगता तो आदमी का बच्चा है, उसके पास कैसे पहुँचा। पास के कई गाँवों में यह खबर फैल गई। गाँव के प्रधान ने कहा कि जो उस चौपाए बालक को पकड़कर लाएगा, उसे अच्छा-खासा इनाम दिया जाएगा।

गाँव के पास ही आदिम जाति सेवक संघ का आश्रम था। वहाँ पहाड़ी आदिवासी जातियों के बच्चे पढ़ते थे। एक दिन उनके अध्यापक जंगल की तरफ जा रहे थे। तभी उन्हें यह बच्चा अपनी लोमड़ी माँ के साथ घूमता दिखाई दिया। मास्टर जी ने शोर मचाया— "मिल गया, दौड़ो। वह भागा, वह भागा।"

कुछ बड़े बालक मास्टर जी की सहायता के लिए आए। लोमड़ी और उसके विचित्र बच्चे को चारों ओर से घेर लिया। लोमड़ी तनकर खड़ी हो गई। मास्टर जी समझदार थे। उन्होंने माँ की ममता पहचानी। लोमड़ी के पास बड़े प्यार से गए। कुछ खाने को दिया और फिर बच्चे को पकड़ने आगे बढ़े।

उसी समय लोमड़ी बालक मास्टर जी को काटने दौड़ा। बड़ी मुश्किल से उसे पकड़कर आश्रम लाया गया। लोमड़ी भी उनके साथ-साथ आई। उसने कई दिन तक अपने बच्चे के वियोग में खाया पीया भी नहीं। आश्रम में कई दिन तक

उसे देखनेवालों की भीड़ लगी रही।

मास्टर जी उस लोमड़ी बालक को स्नेह से पालने लगे। उसे बड़ी कठिनाई से दो पाँवों पर चलना सिखाया गया। पहली बार जब उसे कपड़े पहनाए गए, तो वह उन्हें अपने नाखूनों से फाड़ने लगा।

एक दिन वह फिर जंगल में जाने के लिए मचल उठा। मास्टर जी के घर से भाग निकला। सारे आश्रमवासी परेशान हो गए। आश्रम के संचालक और उनकी पत्नी ने तो कई दिन तक कुछ खाया पीया तक नहीं।

एक दिन बड़ा करिश्मा हुआ। संचालक अपने घर में थे। अचानक बाहर शोर मचा– "लौट आया। लौट आया।"

संचालक और उनकी पत्नी दौड़े-दौड़े बाहर आए। सामने देखा, तो पुलक उठे। लोमड़ी बालक लौट आया था।

अब वह कहीं नहीं भागता। आश्रम के दूसरों लड़कों की तरह पढ़ता लिखता है और कबड्डी देखता है। पर कभी-कभी लोमड़ी की तरह "चीखने-चिल्लाने" की हुड़क उसे जरूर होती। कुछ लोग प्यार से उसे मास्टर लोमड़ी सिंह के नाम से पुकारते थे। अब तो वह शेर सिंह है।

(मध्यप्रदेश की एक लोककथा)

11

बन्नो

हिमालय की गोद में एक गाँव था। वहाँ गद्दी जाति का एक किसान अपने रेवड़ के साथ जा रहा था। वह बहुत ही अच्छी बंसी बजाता था। उसकी बंसी को सुनकर भालू और शेर भी शिकार करना भूल जाते थे।

मौसम साफ़ हो गया था। बर्फ पिघल चुकी थी। वह बंसी बजाता आगे बढ़ रहा था।

अचानक गड़गड़ाहट की आवाज़ हुई। एक बिजली-सी चमकी और चारों ओर अद्भुत प्रकाश छा गया, सोने के रंग जैसा। किसान ठगा-सा रह गया। उसने देखा, सामने की एक पहाड़ी फट गई है। जहाँ से पहाड़ी फटी, वहाँ एक कंदरा बन गई थी।

किसान की बंसी उसके ओठों पर ज्यों-की-त्यों ठहर गई। वह उस जादू भरे दृश्य को देखने लगा। उसने देखा, सामने एक सुंदर स्त्री खड़ी थी। उसने काले रंग की घघरिया पहन रखी थी। सिर पर लाल रंग का दुपट्टा बाँध रखा था। उसके हाथों के स्थान पर मोर के पंख थे।

किसान भयभीत था। तभी वह बोली— "मैं बन्नो देवी हूँ। तेरी बंसी ने मुझे मोहित कर लिया है। घबरा मत। मैं तुझे बहुत-सी भेड़-बकरियाँ देती हूँ। लेकिन यह घटना किसी को मत बताना। हाँ, मेरे नाम का एक मंदिर यहाँ जरूर बनवा देना।"

बन्नो देवी यह कहकर अंतर्धान हो गई। किसान ने देखा कि पहाड़ी की उस कंदरा से एक के बाद एक भेड़-बकरियाँ निकलती आ रही हैं। उसने सोचा— "इतना रेवड़ मैं क्या करूँगा? क्यों न अपने गाँववालों को भी बाँट दूँ।"

पहले तो किसी को विश्वास नहीं हुआ। लेकिन बाद में सभी बूढ़े-बच्चे उसके साथ हो लिए। वे गुफा के पास पहुँचे। तभी एक गड़गड़ाहट हुई। जितनी

भेड़-बकरियाँ कंदरा से निकली थीं, उसी में वापस चली

बात-की-बात में रेवड़ की जगह शिलाएँ नज़र आने लगीं। लोभ में फँसा सारा गाँव वापस लौट गया। वह किसान उदास था। उसकी बंसी भी कहीं खो गई थी। हाँ, बच्चों को कुछ बकरियों के बच्चे ज़रूर मिल गए।

इन बच्चों ने बड़े होकर एक मंदिर बनवाया। बन्नो देवी अमर हैं। हिमाचल प्रदेश में उनकी पूजा की जाती है। गाँव के लोग आज भी उस घटना को दोहराते हैं। गाँववालों का विश्वास है कि अगर वह किसान गाँववालों को न बताता तो उसे भेड़ बकरियाँ मिल जातीं।

(एक गद्दी लोककथा)